Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

छत्तीसगढ़ में भारिया जनजाति की उत्पत्ति एवं बसाहट का एकल अध्ययन

Smt. Sweta Jain[1]* Dr. Pramod Kumar Sharma[2]

[1] Assistant Professor, Department of Sociology, Post-Graduate Arts and Commerce Department of Civil, Bilaspur (Chhattisgarh)

[2] Retired Department of Head, Department of Sociology, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.)

सारांश – *भारिया जनजाति का विस्तार क्षेत्र मुख्यतः मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य है। यह जनजाति छत्तीसगढ़ में कोरबा, बिलासपुर एवं जांजगीर जिले में फैली हुई है। इस अपेक्षाकृत बड़ें भाग में फैली जनजाति का एक छोटा समूह कोरबा जिले के कटघोरा विकासखंड में बीते कुछ दर्शकों से निवास कर रहा है। अध्ययन क्षेत्र कोरबा भारत के नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ का एक औद्यौगिक क्षेत्र है। कोरबा जिला चारों ओर से वनों से घिरा है यहां की मुख्य निवासी आदिवासी है। इसी क्षेत्र में भारिया जनजाति भी निवास करती है यह मूल रूप से मध्यप्रदेश की जनजाति है जो ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजों के प्रताड़ना के कारण छिन्न-भिन्न हो गए थे जिससे भारिया जनजाति का एक छोटा समूह कोरबा जिला में आकर निवास करने लगा। छत्तीसगढ़ की भारिया एक ऐसी आदिम जाति है जिनके पास अपनी प्राचीन संस्कृति बहुत कम बची है। आज जो कुछ भी भारिया जनजाति के पास शेष है, वह मिश्रित संस्कृति का मिला-जुला रूप है।*

मुख्य शब्दः- भारिया जनजाति छतीसगढ़ कोरबा उत्तपति बसाहट।

----------X----------

उद्देश्यः-

कोरबा जिले के कटघोरा विकासखण्ड में निवासरत् भारिया जनजाति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को अध्ययन करने का प्रयास किया गया है जिसके माध्यम से यह ज्ञात करना कि छत्तीसगढ़ राज्य में भारिया जनजाति के लोग कहाँ से आए हैं? इनको यहाँ पर किसने बसाया? इनका संबंध कहाँ से है तथा इनकी जनसंख्या सीमित क्यों हैं?

प्रस्तावना-

समाज एवं संस्कृति को जनजातियां अत्यंत सुंदर छवि प्रदान करती है। भारत में अनेक जनजातियां निवास करती है जो विकास की विभिन्न अवस्थाओं में है इसलिए भारत में जनजातियों के वितरण एवं उनमें पायी जाने वाली विभिन्नताओं पर ध्यान देना अनिवार्य हो जाता हैं।[1] यह जनजाति समूह प्रारंभ से वन्य अंचलो, पर्वत-पहाड़ों एवं दुर्गम स्थानों में निवास कर रहा है। समय-समय पर कई बाहरी जाति आती रही है, जिसने जनजाति समूह के संस्कृति को प्रभावित किया है इसके उपरांत भी जनजाति समूह ने अपने संास्कृतिक विशेषताओं को नष्ट नहीं होने दिया है। यदि भारत को प्रजातियों एवं जनजातियो के मेलटिंग प्वांइट के रूप में वर्णित किया जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। विश्व में जनजातियों के वितरण की दृष्टि से भारत वर्ष में जनजातियों की संख्या किसी भी देश से अधिक है।[2] आदिवासी शांतिप्रिय लोग होते है। उनका पारंपरिक रूप से अधिकृत भूमि के प्रति लगाव अतुलनीय है। जब भी कोई उनकी भूमि पर अतिक्रमण करता है तो वे उसका वीरतापूर्वक प्रतिरोध करते है।[3] इसी संदर्भ में छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली भारिया जनजाति मूलतः मध्यप्रदेश की जनजाति है जो बाहरी आक्रमणों से प्रभावित होकर छिन्न-भिन्न हो गए थे परंतु स्वयं के जनजाति समूह एवं संस्कृति को बचाने के उद्देश्य से भारिया जनजाति का एक छोटा-सा समूह छ.ग. के कोरबा जिले कटघोरा में आकर बसा।

www.ignited.in

अध्ययन विधि-

यह अध्ययन आनुभाविक विश्लेषण अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारिया जनजाति के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना है जिसके अंतर्गत् प्राप्त तथ्यों एवं वर्तमान सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। यह एक गुणात्मक अध्ययन है जिसमें चयनित दो गांव के 42 परिवार के 2 उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष संपर्क करके तथ्य संकलन की महत्वपूर्ण पद्धति सकल अध्ययन के द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है। 2 उत्तरदाताओं में से प्रथम का नाम श्री मनहरण भारिया, लिंग-पुरूष, आयु-55 वर्ष शिक्षा-एम.बी.बी.एस तथा द्वितीय का नाम श्री संत राम भारिया, लिंग-पुरूष, आयु-48 वर्ष शिक्षा-पॉलिटेक्निक है। प्राप्त तथ्यों के सत्यापन हेतु अध्ययन से संबंधित साहित्यों से प्राप्त तथ्यों का भी विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषण:-

कटघोरा, कोरबा जिले का एक विकासखंड एवं नगर पंचायत हैं। यह जिला मुख्यालय से 26 कि.मी. उत्त्र में तथा 196 कि.मी. राज्य राजधानी से दक्षिण में हैं। कटघोरा की स्थिति 22030' 82033' E/2205' 82055' E पर हैं। इसकी औसत ऊँचाई 1023 फीट हैं। कटघोरा के प्रमुख पर्यटन स्थलो में कोसगईगढ़, मड़वारानी एवं चैतुरगढ़ हैं। इसकी कुल जनसंख्या 18.54% हैं।[4] जिसमें 49 प्रतिशत पुरूष एवं 51 प्रतिशत महिलाएं हैं। विकासखंड की कुल साक्षरता दर 62 प्रतिशत हैं। यथासागर झील इसके मध्य में स्थित हैं। कटघोरा विकासखंड के अंर्तगत 108 गांव हैं। जिसमें छुरीखुर्द, केंदईखार, गोपालपुर, भाठापारा, बचर, बिरवट, लाटाखार, अगारखार शरिया बाहुल्य ग्राम हैं। कटघोरा क्षेत्र में शरिया जाति के करीब 400 परिवार एवं उनकी जनसंख्या लगभग 2500 हैं।[5]

छत्तीसगढ़ में भारिया जनजाति की उत्पत्ति एवं बसाहट:-

भारिया जनजाति, द्रविड़ियन प्रजाति के आदिम लोग हैं। सर हीरालाल एवं रसेल ने अपनी पुस्तक-ट्राइब्स एंड कास्ट् ऑफ़ द सेंट्रल प्राविंहस में लिखा है भारिया या भूमिया एक ही जाति के नाम है। भूमिया को कई ग्रंथकारी ने ग्राम देवता की पूजा करने वाले पुजारी के रूप परिभाषित किया है भूमिया एक सम्मानसूचक नाम है भूमिया अर्थात् धरती के राजा।[6] भारिया प्रमुखतः छत्तीसगढ़ में बिलासपुर, कोरबा एवं जांजगीर जिले में पाई जाती है। भारिया की प्रमुख उपजाति-समूह भूमिया, भुईहर एवं पंडो जनजाति है। इनकी मूल बोली भरनोटी या भारियाटी हैं। यह जनजाति वनों में एकांत, सुदूर एवं ऊँचे स्थानों में रहना पसंद करते है।[7] इनके निवास स्थान को ढाना कहते है। एक ढाना में दो से लेकर पच्चीस तक घर होते है। भारिया जनजति के लोग मध्यम कद, छरहरा बदन एवं सांवले रंग के होते है प्रारंभ में यह जनजाति स्थानांतरित कृषि दाहिया खेती करते थे जो वर्तमान में समाप्त हो चुकी है। भारिया समता मूलक समाज है जिसमें स्त्री पुरूष का बराबर दर्जा होता है।[8] छत्तीसगढ़ जनगणना रिर्पोट 2011 के अनुसार इनकी कुल जनसंख्या 1,13,967 हैं जिसमें 57,370 पुरुष एवं 56,597 महिलाएं हैं जिनके कुल 26,669 परिवार हैं। यह जनसंख्या रिर्पोट भारिया एवं उनके उपसमूह की कुल जनसंख्या को प्रस्तुत करती है।[9]

भारिया जनजाति की उत्पत्ति के संबंध यह मान्यता है कि जब पांडवो को वनवास हुआ था तब पांडव अपनी कुटिया का निर्माण भारू नामक घास से करते थे, पांडव पांच भाई थे कौरव सैकड़ो भाई थे। इसलिए महाभारत युद्ध में पाँच पाण्डवों द्वारा सैकड़ो कौरवों को पराजित करना मुश्किल था। तब अर्जुन ने भारू नामक घास को हाथों में लेकर उसकी मानव मूर्ति बनाया एवं उसे मंत्र-शक्ति द्वारा जीवित किया जिन्होंने कौरवों से युद्धकर उन्हें परास्त किया। यह मानव ही भारिया कहलाए।[10] इसलिए भारियाजन स्वयं को पाण्डवों का वंशज मानते हैं एवं अर्जुन को अपना पितृपुरूष मानते हैं। यह जनजाति अपने घर के निर्माण के लिए भारु घास का उपयोग करते थे इसी भारु नामक घास के उपयोग से ही इस जनजाति का नामकरण भारिया हुआ।

भारिया जनजाति अपना मूल निवास-स्थान बांधवगढ़ मानते हैं।[11] बांधवगढ़ के महाराजा कर्णदेव भारिया वंश के थे। बांधवगढ़ के महाराजा कर्णदेव एवं मंडला के महाराजा संग्राम साय समधी थे। महाराजा कर्णदेव की पुत्री का विवाह संग्रामसाय के पुत्र से हुआ था। चूंकि दोनों रियासतों की बोली अलग थी। इसलिए कर्णादेव की पुत्री वहां की बोली नहीं समझ पाएगी इस उद्देश्य से महाराजा कर्णदेव ने अपनी पुत्री के साथ भारिया जनों को मंडला भेजा एवं महाराजा कर्णदेव ने अपने समधी महाराजा संग्रामसाय से भारियाजन को बसाने हेतु जमीन देने का अनुरोध किया जिसे महाराजा संग्रामसाय ने स्वीकार कर लिया। इसके साथ ही महाराजा संग्रामसाय ने ऐसे भारियाजन जो शारीरिक रूप से कमजोर परंतु बुद्धिमान थे उन्हें अपने सत्ता संचालन का कार्य सौंपा एवं जो भारियाजन शारीरिक रूप से मजबुत थे उन्हें कृषि कार्य सौंपा। इस प्रकार यह जनजाति मंडला में स्थायी रूप से बस गयी।

मंडला से कोरबा क्षेत्र आगमन- सन् 1857 की क्रांति के दौरान अंग्रेजों ने राजा संग्रामसाय को जबलपुर में फांसी पर चढ़ा दिया जिससे अपनें राजा की मृत्यु के कारण एवं अंग्रेजों की प्रताड़ना से संपूर्ण मंडला क्षेत्र में दहशत छा गयी थी। महाराजा संग्रामसाय की मृत्यु के पश्चात् भारियाजन अपने आप को निराधर पाकर छिन्न-भिन्न हो गए। जिससे कुछ भारियाजन विंध्य पर्वत होते हुए सिवनी, नरसिंहपुर, जबलपुर, छिंदवाड़ा के आसपास के घने जंगलों में बस गए एवं कुछ भारियाजन शहडोल, पेंड्रा व छुरी-कोरबा के आसपास के घने जंगलों में बस गए। इस प्रकार यह जनजाति सर्वप्रथम बार छत्तीसगढ़ में आयी।

छुरी रियासत में विस्थापन- गढ़ छुरी के जमींदार श्री गजेंद्रपाल सिंह के द्वारा इनके छुरी आगमन पर इन भारियाजनों को इनकी कृषि में दक्षता एवं राजपरिवार से जुड़े होने के कारण इन्हें बसने के लिए पर्याप्त जमीन प्रदान की साथ ही गांव की जागीरदारी (गौंटी) भी प्रदान की। ग्राम छुरीरवुर्द, किंदईरवार, जलपोस, गेरवा, गोपालपुर में भारिया जनजाति के गौंटिया थे एवं आज भी इनके परिवार के सदस्यों को गौंटिया शब्द से संबोधित किया जाता हैं।वर्तमान में ग्राम जलपोस हसदेव बांध के निर्माण के कारण एवं ग्राम गेरवा एन.टी.¬पी.सी. के निर्माण के कारण विस्थापित हो चुका हैं जिससे यहां के निवासरत भारियाजन अन्यत्र बस गए हैं।

भारिया जनजाति के पूर्वजों का वैवाहिक संबंध मण्डला, शहडोल, जबलपुर एवं पेण्ड्रा के भारिया से रहा है परंतु दूरदराज होने के कारण एवं आवागमन के साधनों के अभाव के कारण इनका संबंध उनसे टूट गया। शरियाजनो के अनुसार इनका अंतर्जातीय विवाह राजगोंडो से होता था। गोंडो की लड़की से शरियाजन शादी करते थे एवं गोंड भी भारिया की लड़की से शादी करते थे लेकिन गोंडो ने जब चूड़ी प्रथा लागू की तब इनके पूर्वजो ने गोंडो से संबंध तोड़ दिया।[12] क्योंकि शरिया समुदाय मे चूंड़ी प्रथा नहीं हैं। इस प्रथा में विधवा अपने देवर के नाम की चूड़ी पहनती हैं लेकिन शरिया जनजाति में यह अनिवार्य नहीं हैं।[13] वर्तमान में यह जनजाति मुख्यतः कटघोरा क्षेत्र में सीमित हो गई हैं। कटघोरा क्षेत्र के भारियाजनों के अनुसार इस जनजाति के कुल 51 गोत्र होते हैं परंतु इक्यावन गोत्रों के बारे में भारिया नहीं जानते। अधिक से अधिक 15-16 गोत्र का पता है। पातालकोट में भारिया जनजाति के 16 गोत्र निवास करते हैं जिनमें समान गोत्र में वैवाहिक संबंध नहीं होते है।[14] केवल 11 गोत्र के भारियाजन यहां एक साथ आए थे।ये गोत्र हैं- खमरिया, परेतिया, अंगारिया, नेवरिया, बाधनिया, निमतिया, अमोरिया, केसरिया, नागरिया, खतिया एवं भरतिया। इन 11 में से 2 गोत्र खतिया एवं भरतिया के लोगों का वंश वृक्ष समाप्त हो गया है। शेष 9 गोत्र के लोग कटघोरा क्षेत्र में निवास करते है।[15] भारिया जनजाति समाज में गोत्र आधारित टोटम का भी महत्व है जिसके अंतर्गत इनमें 9 टोटम पाए जाते हैं, बाघ, खम्मार वृक्ष, प्रेत, आमवृक्ष, अंगार बंदर, नीम, नेवला, हल है इनके टोटम है। वर्तमान में शरिया जनजाति का एक क्षेत्रीय सामाजिक संगठन 'शरिया समाज क्षेत्र कटघोरा' बनाया गया हैं। इस संगठन के माध्यम से समाज में अनुशासन लाने, भाईचारा की शवना जागृत करने एवं एकता स्थापित करने का प्रयास किया जाता हैं। तथा समाज को शिक्षा के प्रति प्रोतसाहित करने का कार्य कर रही हैं परन्तु संगणन के द्वारा समाज के परम्परागत कार्यो में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाता हैं।

छ.ग. की भारिया जनजाति

छ.ग. की भारिया महिला

भारिया महिला सरपंच पण्डरीपानी ग्राम

निष्कर्षः-

शरिया जनजाति के अवलोकन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता हैं कि शरिया जनजाति वर्तमान में छतीसगढ़ के

www.ignited.in

मूल निवासी बन चूके हैं एवं बहुत लंबे समय से छतीसगढ़ राज्य में रहने के कारण इनके जीवनयापन,खान-पान,रीति-रिवाज, सामाजिक, सांस्कृतिक तौर-तरीको पर छतीसगढ़ क्षेत्र की संस्कृति की सुंदर छवि दिखाई देती हैं। वर्तमान में शरिया जनजाति का एक क्षेत्रीय सामाजिक संगठन श्शरिया समाज क्षेत्र कटघोराश् बनाया गया हैं। इस संगठन के माध्यम से समाज में अनुशासन लाने, शईचारा की शवना जागृत करने एवं एकता स्थापित करने का प्रयास किया जाता हैं। तथा समाज को शिक्षा के प्रति प्रोतसाहित करने का कार्य कर रही हैं परन्तु संगणन के द्वारा समाज के परम्परागत कार्यो में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाता हैं।

सन्दर्भ सूचीः-

1. पाण्डेय, गणेश एवं पाण्डेय, अरुणा (2012): भारत की जनजातियां, राधा पब्लिकेशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, Vol. 1, pp. 1
2. वर्मा, आर. सी. (1993): भारतीय जनजातिय के विकास का ऐतिहासिक विवेचन, सरस्वती प्रकाशन, महरौली गुड़गांव रोड, Vol. 1, pp. 391
3. रसेल, आर. वी. एवं हीरालाल, आर. बी. (1960): द ट्राइब्स एंड कास्ट ऑफ़ सेंट्रल प्रावंहिसेस ऑफ़ इंडिया, लंदनः मैकमिलन एंड कम्पनी रिप्रिंट 1975, दिल्लीः कॉस्मो पब्लिशिंग, Vol. 2, pp. 242-250
4. http://hi.m.wikipedia.org/wiki/dV?kksjk
5. शर्मा, सुरेश कुमार (1994.95): कटघोरा तहसील की भारिया जाति की सामाजिक संरचना,गोंडवाना लैण्ड समाचार पत्र (मासिक) कोरबा pp.1
6. मोहन्ती, पी. के. (2004): एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ प्रीमिटिव ट्राइब्स इन इंडिया, कल्पाज पब्लिकेशन, दिल्ली Vol. 1, pp. 46-56
7. नायडू, पी. आर. (2002): भारत के आदिवासी विकास की समस्याएं, राधा पब्लिकेशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, Vol. 2, pp. 49
8. www.censusindia.gov.in.st-22-pca-all-appendix.xls.
9. शर्मा, सुरेश कुमार (1994.95): कटघोरा तहसील की भारिया जाति की सामाजिक संरचना, गोंडवाना लैण्ड समाचार पत्र (मासिक) कोरबा pp. 1
10. नायडू, पी आर (2002): भारत के आदिवासी विकास की समस्याएं, राधा पब्लिकेशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, Vol. 2, pp. 48
11. तिवारी, विजय कुमार (2004): छतीसगढ़ की जनजातियां, हिमालया पब्लिकेशन हाउस, Vol. 1, pp. 57.64
12. तिवारी, विजय कुमार (2004): छतीसगढ़ की जनजातियां, हिमालया पब्लिकेशन हाउस, Vol. 1, pp. 62
13. जमगादे, कल्पना बी. (2013): एन. इम्पेरिकल स्टडी ऑन हेल्थ एंड एजुकेशन स्टेटस ऑफ़ भारिरया वूमेन एट पातालकोट pp. 144.178
14. शर्मा, सुरेश कुमार (1994.95): कटघोरा तहसील की भारिया जाति की सामाजिक संरचना, गोंडवाना लैण्ड समाचार पत्र (मासिक) कोरबा pp. 3
15. तिवारी, विजय कुमार (2004): छतीसगढ़ की जनजातियां, हिमालया पब्लिकेशन हाउस, Vol. 1, pp. 62

Corresponding Author

Smt. Sweta Jain*

Assistant Professor, Department of Sociology, Post-Graduate Arts and Commerce Department of Civil, Bilaspur (Chhattisgarh)

asjain2021@gmail.com